नमो आदिनाथ

ॐ कार स्तोत्र

अरहंत या अरिहंत

नमो

श्री कुन्दकुन्द आचार्य महाराज

श्री पुष्पदन्त आचार्य महाराज

श्री भूतबलि आचार्य महाराज

श्री मानतुंग आचार्य महाराज

श्री विद्यासागर आचार्य महाराज

मुनि श्री सुधासागर महाराज

णमो अरहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं।

णमो अरहन्ताणं – सभी तीर्थंकरों को नमस्कार।

णमो सिद्धाणं – सभी सिद्ध परमेष्ठीयों और अरिहंत परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो आइरियाणं – सभी गणधर और सच्चे दिगंबर जैन आचार्य परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो उवज्झायाणं – सभी सच्चे दिगंबर जैन उपाध्याय परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो लोएसव्वसाहूणं – सभी सच्चे दिगंबर जैन मुनियों को नमस्कार।

स्त्रीणाम् शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-जालम् ।।

नमो नमो आदिनाथ। भगवन्! असंख्यात स्त्रियों ने असंख्यात नक्षत्रों जैसे असंख्यात अरिहंतो को जन्म दियें। जैसे सूर्य का जन्म केवल पूर्व दिशा मे ही होता है, केवल एक अत्यंत सौभाग्यशालि माता ही आपकी माता बन पायी।

असंख्यात अरिहंत बन गए, केवल 24, चौबीस, ही तीर्थंकर बन पाये।

तात्पर्य यह हे, यदि भगवान आदिनाथ सूर्य हैं तो भगवान बाहुबलि नक्षत्र हैं।

अरिहंत शब्द, केवलि भगवान जो चौंतीस अतिशय से युक्त है (तीर्थंकर) और केवलि भगवान जो चौंतीस अतिशय से रहित हैं, दोनों को संबोधित करता हैं।

अरहंत शब्द केवल तीर्थंकर को संबोधित करता हैं।

भगवान आदिनाथ को अरिहंत और अरहंत कह सकते हैं।

भगवान बाहुबलि को केवल अरिहंत कह सकते हैं, अरहंत नहीं कह सकते।

तीर्थंकर का तात्पर्य समौशरण और धर्मोदय है। इसलिए सूर्योदय होने पर सूर्यनमस्कार नहीं बल्कि समौशरण की भावना भानि चाहिए।

केवलज्ञान के बाद तीर्थंकर भगवान का समौशरण होता है औंर धर्मोदय का निमित्त बनते हैं,

इसीलिये “णमो अरहंताणं” से पहले जिनेन्द्र भगवान को नमस्कार किया हैं।

केवलज्ञान के बाद, केवलि भगवान जो चौंतीस अतिशय से रहित हैं उनका समौशरण नहीं होता बल्कि मोक्ष होता है। इसीलिए “णमो सिद्धाणं” से केवलि भगवान, जो चौंतीस अतिशय से रहित हैं, उन्हें व्यवहार से सिद्ध परमेष्ठी मान कर नमस्कार किया हैं।

गणधर परमेष्ठी आचार्य परमेष्ठी होते ही हैं। इसीलिए “णमो आइरियाणं” से गणधर परमेष्ठी और आचार्य परमेष्ठीयों को नमस्कार किया है।

णमोकार मंत्र नहीं

बल्कि

ॐ कार स्तोत्र कहो।

अरहंत का अ, अशरीरी का अ, आचार्य का आ, उपाध्याय का उ, औंर मुनि का म् – अ, अ, आ, उ, म् के संधि से संयुक्ताक्षर ॐ कार बना है।

णमोकार शब्द व्याकरण से दूषित हैं।

वर्ण ग्रहणे सवर्ण ग्रहणं। कार ग्रहणे केवल ग्रहणं (कातंत्ररूपमाला)।

अवर्ण कहने से "अ औंर आ" दोनों का ग्रहण होता हैं। अकार कहने से केवल "अ" स्वर का ग्रहण होता हैं।

णमो मे दो अक्षर होने से कार शब्द से अर्थ ग्रहण बाधित हो जाता हैं।

ॐ कार स्तोत्र कहने से ॐ का ग्रहण हो जाता है जो पञ्च परमेष्ठीयों का समागम हैं।

ऐसा लगता हैं णमो ॐ कार स्तोत्र धीरे-धीरे णमोकार मंत्र बन गया।

मंत्र बीजाक्षर युक्त होते हैं। मंत्र वन्दना औंर आराधना के विषय नहीं होते इसीलिए मंगलाचरण मंत्रों से नहीं होते।

स्तोत्र छंदबध होते हैं। वन्दना औंर आराधना स्तोत्रों से होतीं हैं इसीलिए मंगलाचरण स्तोत्र से होती हैं।

“णमो अ सि आ उ सा” औंर “णमो ॐ” एक ही है हैं।

त्रिविध नमस्कार

1

णमो अरहन्ताणं –इस पृथ्वी के हुंडावसर्पिणी के सभी 24 तीर्थंकरों को नमस्कार।

णमो सिद्धाणं –इस पृथ्वी के हुंडावसर्पिणी के सभी सिद्ध परमेष्ठीयों को नमस्कार। सभी अरिहंत परमेष्ठी सिद्ध बन चुके हैं इसलिए केवल सद्धों को इस विधी मे नमस्कार किया जाता हैं।

णमो आइरियाणं – इस पृथ्वी के हुंडावसर्पिणी के सभी गणधर और भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन आचार्य परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो उवज्झायाणं –इस पृथ्वी के हुंडावसर्पिणी के सभी भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन उपाध्याय परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो लोएसव्वसाहूणं –इस पृथ्वी के हुंडावसर्पिणी के सभी भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन मुनियों को नमस्कार।

2

णमो अरहन्ताणं –इस पृथ्वी के सभी तीर्थंकरों को नमस्कार।

णमो सिद्धाणं –इस पृथ्वी के सभी सिद्ध परमेष्ठीयों को नमस्कार। सभी अरिहंत परमेष्ठी सिद्ध बन चुके हैं इसलिए केवल सद्धों को इस विधी मे नमस्कार कि या जाता हैं।

णमो आइरियाणं – इस पृथ्वी के सभी गणधर और भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन आचार्य परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो उवज्झायाणं –इस पृथ्वी के सभी भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन उपाध्याय परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो लोएसव्वसाहूणं –इस पृथ्वी के सभी भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन मुनियों को नमस्कार।

3

णमो अरहन्ताणं – इस विश्व **के सभी तीर्थंकरों को नमस्कार।**

णमो सिद्धाणं –इस विश्व के सभी सिद्ध और **अरिहंत परमेष्ठी**यों को नमस्कार।

णमो आइरियाणं – इस विश्व के सभी भूत और वर्तमान के गणधर और सच्चे दिगंबर जैन आचार्य परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो उवज्झायाणं –इस विश्व के सभी भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन उपाध्याय परमेष्ठीयों को नमस्कार।

णमो लोएसव्वसाहूणं – इस विश्व के सभी भूत और वर्तमान के सच्चे दिगंबर जैन मुनियों को नमस्कार।

पञ्च परमेष्ठी:

अरहंत – तीर्थंकर।

सिद्ध - अरिहंत औंर सिद्ध।

आचार्य - गणधर औंर सच्चे दिगंबर जैन आचार्य।

सच्चे दिगंबर जैन उपाध्याय।

सच्चे दिगंबर जैन मुनि।

By Manjunath Nirantar Jain